शुक्रवार

तुझिया वियोगे जीवत्व आले। शरीर योगे बहु दुःख झाले। अज्ञान दारिद्रय माझे सरेना। तुजवीण रामा मज कंठवेना।।1।। परतंत्र जीणें कंदूं किती रे।

उदास माझ्या मनिं वाटतें रे। लल्लाटरेखा तरि पालटेना। तुज.।।2।। जडली उपाधी अभिमान साधी। विवेक नाहीं बहुसाल बाधी। तुझिया वियोगे पळही गमेना। तुज. ।।3।। विश्रांति नाहीं अभिमान देहीं। कुळाभिमानें पडलों प्रवाहीं। स्वहीत माझे हातां दिसेना। तुज.।।4।। संसार संगें बहु पीडलो रे। कारूण्यसिंधु मज सोडवी रे। कृपाकटाक्षे सांभाळि दीना। तुज.।।5।। विषयी जनानें मज लाजवीले। प्रपंचसंगे आयुष्य गेलें। समयीं बहु क्रोध शांती घडेना तुज.।।6।। सुदृढ झाली देहबुद्धि देहीं। वैराग्य कांही होणार नाहीं। अपूर्ण कामीं मन हे विटेना। तुज.।।7।। निरूपणीं हे सद्वृति होते।

स्थलत्याग होतां सवेचि जाते। काय करूं रे क्रिया घडेना । तुज. ।।8। जय जय दयाळा त्रैलोक्यपाळा। भवसिंधुहारी मज तारि हेळां। स्वामीवियोगे पळही गमेना। तुज ।।9।। आम्हां अनाथा तूं एक दाता। संसारचिंता चुकवी समर्था। दासा मनीं आठव वीसरेना। तुज... ।।10।। जय जय रघुवीर समर्थ ।।